ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- सी.सी.ए.

दिनांक—28/08/2020

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

प्यारे बच्चों जैसा कि आप सबको पता है, कल(29 अगस्त) खेल जगत के जादूगर ध्यानचंद का जन्म दिवस है क्यों ना आज

उनके जन्मदिवस पर उनके बारे में ज्ञान अर्जित किया जाए!

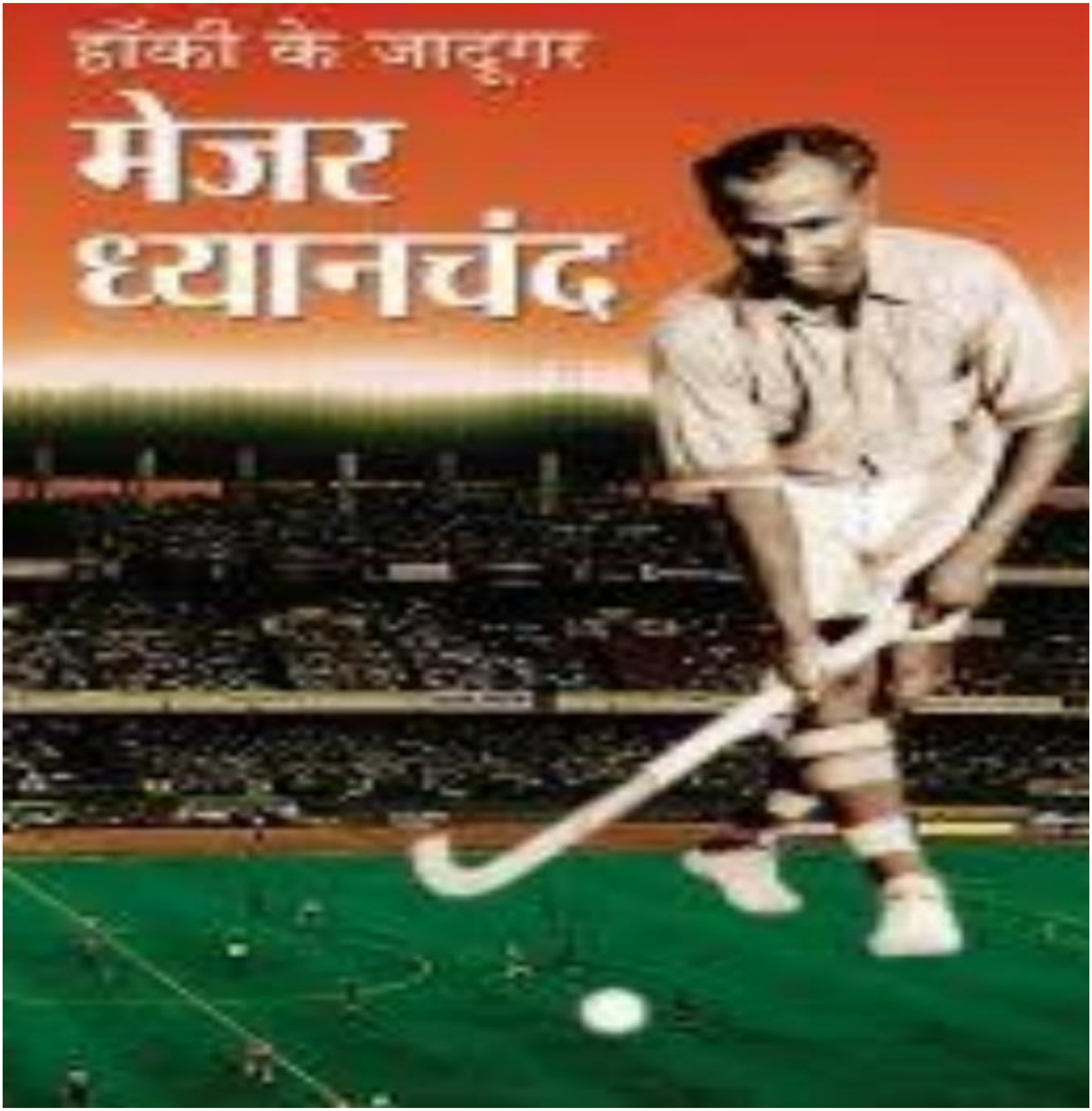

मेजर ध्यानचंद सिंह का जन्म 29 अगस्त 1905 को प्रयाग (अब इलाहाबाद), उत्तर प्रदेश में हुआ था । 1922 में प्राथमिक शिक्षा के बाद सेना के पंजाब रेजिमेंट में बतौर सिपाही भर्ती हुए ।1927 में 'लंदन फ़ॉकस्टोन फेस्टिवल' में उन्होंने अंग्रेज हॉकी टीम के खिलाफ 10 मैचों में 72 में से 36 गोल किए । 1928 में एम्सटरडैम, नीदरलैंड में समर ओलंपिक में सेंटर फारवर्ड पर खेलते हुए उन्होंने तीन में से दो गोल दागे । भारत ने यह मैच 3-0 से जीतकर स्वर्ण पदक हासिल किया ।1936 में बर्लिन समर ओलंपिक में फाईनल मैच के पहले हुए एक दोस्ताना मैच में जर्मनी को हराया । पहले हाफ तक 1-0 से आगे चल रही भारतीय टीम ने दूसरे हाफ में सात गोल दाग दिए । मैच देख रहे एडॉल्फ़ हिटलर अपनी टीम की शर्मनाक हार से बौखलाकर बीच में ही मैदान छोड़कर चले गए । 1948 में 42 वर्षों तक खेलने के बाद ध्यानचंद ने खेल से संन्यास ले लिया ।

मेजर ध्यानचंद ने हॉकी के जरिये देश का आत्मगौरव बढाया है । भारतीय जनमानस में हॉकी के पर्याय के रूप में आज भी उनका नाम रचा-बसा है । भारत सरकार ने भी उनके सम्मान के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी है । उनका जन्मदिवस भारत में राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है । दिल्ली का ध्यानचंद स्टेडियम उनके नाम पर है । उनकी याद में सरकार ने ध्यानचंद पुरस्कार रखा है । उन पर डाक टिकट भी जारी किया गया है ।भारत के अलावा विश्व के अनेक दिग्गजों ने भी ध्यानचंद की प्रतिभा का लोहा माना है । क्रिकेट के महानायक सर डॉन ब्रेडमेन ने ध्यानचंद के लिए कहा है- "वह क्रिकेट के रनों की भांति गोल बनाते है" ।जर्मनी के एक संपादक ने ध्यानचंद की उत्तम खेल कला के बारे में इस तरह टिप्पणी की है- "कलाई का एक घुमाव, आँखों देखी एक झलक, एक तेज मोड़, और फिर ध्यानचंद का जोरदार गोल" ।वियना में एक कलाकार ने अपनी पेंटिंग में ध्यानचंद को आठ भुजाओं वाला बनाया। ध्यानचंद के खेल से प्रभावित

हिटलर ने उन्हें जर्मनी में बसने का न्योता दिया । देशभक्ति से लबरेज ध्यानचंद ने उनके इस प्रस्ताव को विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया ।

लीवर कैंसर जैसी लंबी बीमारी को झेलते हुए वर्ष 1979 में मेजर ध्यानचंद का देहांत हो गया |

छात्र कार्य-

लगभग 200 शब्दों में "खेलो इंडिया पढ़ो इंडिया" पर निबंध लिखें

कुमारी पिंकी "कुसुम"